ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 99-101

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

गीतांजलि श्री के उपन्यास "माई" में प्रस्तुत "माई" की मनोदशा

श्रीमती डी0 आमसवेनी मुरली

अध्यक्ष– हिन्दी विभाग, महिलाओं के लिए कला और विज्ञान के श्री रामकृष्ण कॉलेज, न्यू सिद्धपुदुर, कोयम्बटूर (तमिलनाडु) भारत

Received-14.10.2022, Revised-20.10.2022, Accepted-26.10.2022 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***गीतांजलि श्री की पहला उपन्यास माई है। उपन्यास में माई को केंद्रीय पात्र में में रख कर लिखा है, एक स्त्री अपनी पूरी जिंदगी में किस तरह देशों किरदारों को एक साथ निभाती है और अपनी केंद्रिय भूमिका में रहकर परिवार का संचालन करती हैं, सामाजिक दायित्व को निभाती हैं और अपनी कल्पना को पूरा करने के लिए किन–किन का सहयोग लेती हैं, इसका खुला खाता दिखाता है उपन्यास। पुत्री की दृष्टि से माई की बहुमुखी केंद्रीय भूमिका का खाका खींचता है, जिसमें उसके बचपन से लेकर जवान के दिनों से जुड़ी, दर्शन एक रील की तरह सब कुछ साफ–साफ बता देता है माई के बल यह एक स्त्री न होकर सांसारिक लोक व्यवहार और जिंदगी के वटवृक्ष का परिपूर्ण मांडल कहा जा सकता है, जिसमें हर बात शामिल है जो माई में अपनी जिंदगी में महसूर की होती हैं, इसमें अच्छी बुरी बातों से लेकर वे सारी घटना दुर्घटनाएं शामिल है, जो माई के अवचेतन में घर कर जाती हैं और जिन्हें माई कभी भुला नहीं पाती है, माई का इस तरफ से रहना उनके बच्चों को अच्छा नहीं लगता है, वह उन्हें मुक्ति दिलाना चाहते हैं।***

बच्चों की नजर में माई बेचारी हैं,माई के परिवार में माई की इच्छाओं को कभी देखा नहीं जाता है, उसे नजर अंदाज कर दिया जाता है, माई ने अपने परिवार के लिए समर्पित किया है, इस प्रकार हर एक जगत में माई की मनोदशा के बारे में प्रस्तुत किया गया।

कुंजीभूत शब्द– सामाजिक दायित्व, उपन्यास, कल्पना, सांसारिक लोक व्यवहार, वटवृक्ष, दुर्घटनाए, अवचेतन, मनोदशा।

प्रस्तावना– समकालीन हिंदी साहित्य में गीतांजलि श्री महत्वपूर्ण कथा लेखिका है। इनके साहित्य में नारी की विवशता, आधुकनिकता, प्रेम विवाह जैसे समस्याओं का चित्रण हुआ है। गीतांजलि श्री का नाम समकालीन कथा साहित्य में बहुचचित है, समकालीन यथार्थ को उन्होंने अपने साहित्य में सूक्ष्म भाषिक संवेदनाओं के साथ अनेक रूपों में अन्वेषित किया है। समाज की गलत मान्यताओं रुचियों परम्परोओं तथा की से पीडी मूल्यों को चुनाती देना चाहती है। गीतांजलि श्री का जनम १२ जून १९५७ को मैनपुरी उत्तर प्रदेश में हुआ। गीतांजलि श्री का पूरा नाम गीतांजलि श्री पांडेय था, लेकिन उन पर अपनी माँ के विचारो का इतना प्रभाव रहा कि उन्होंने अपनी नाम को माँ के नाम से जोड़ दिया। गीतांजलि श्री ने हिंदी साहित्य को पांच उपन्यास और पांच कहानी संग्रह दिए है साहित्यकार खुद बनता नहीं, वह आस पास के गली मोहल्लें, समाज और बड़े व्यकित से प्रभावित होकर बनता है, यहाँ माई उपन्यास में प्रस्तुत माई की मनोदशा की बारे में विचार से देखेगे।

उपन्यास माई और उसके बच्चों, सुनैना और सुबोध के उसे बचाने के प्रयासों की कहानी का पता लगाता है। उत्तर भारतीय परिवार में स्थापित, माई बाबू की पत्नी, दादा और दादी की बहू और सुनैना और सुबोध की मां है, लेकिन पाठक कभी नहीं देखते कि माई उन रिश्तों से बाहर कौन है। माई हमेशा चुपचाप काम करती रहती है और दूसरों के लिए काम करती रहती है। सुनैना सोचती है कि क्या वह अपनी मां को दमनकारी पारिवारिक स्थिति से बचने के लिए राजी कर सकती है, और इस तरह खुद को मुक्त कर सकती है। सुनैना और सुबोध अपनी मां की पारंपरिक लिंग भूमिकाओं की स्वीकृति की आलोचना करते हैं, लेकिन वे पारंपरिक बच्चों की तरह व्यवहार करके भी इसमें योगदान करते हैं।

भले ही दोनों भाई–बहन अपनी मां से बिना शर्त प्यार करते हैं और उसके लिए सबसे अच्छा चाहते हैं, वे अपनी मां को पत्नी, बहू और मां के रूप में अपनी भूमिका से बाहर नहीं देख पा रहे हैं – जो उपन्यास की सबसे बड़ी चिंता है। सुनैना ने माई को पितृसत्तात्मक उत्पीड़ित समाज की मुख्य शिकार के रूप में चित्रित किया है। उपन्यास की शुरुआत से माई को शक्तिहीन और कमजोर दिखाया गया है–

"हम हमेशा से जानते थे कि माँ की रीढ़ कमजोर थी। डॉक्टर ने हमें बाद में बताया। कि जो लोग लगातार झुकते हैं और इस समस्या को प्राप्त करते हैं ... उन्हें हर समय दर्द होता है: जब वे झुकते हैं तो दर्द होता है और जब वे सीधे खड़े होते हैं, तो दर्द होता है।"

उसकी कमजोर रीढ़ का उपयोग उसकी विनम्रता और चिकित्सा बीमारी दोनों की अभिव्यक्ति के रूप में किया जाता है। सुनैना और सुबोध लाक्षणिक रूप से दावा करते हैं कि उनकी मां की रीढ़ कमजोर है, लेकिन यह वैज्ञानिक रूप से उनके भौतिक शरीर पर डॉक्टर की पुष्टि से पुष्ट होता है। अपने दोनों अर्थों में 'कमजोर रीढ़' होने के परिणामस्वरूप, माई लगातार दर्द में है जो उसके शक्तिहीन अस्तित्व का भी प्रतीक है। हालांकि, सवाल उठाया गया है कि 'क्या माई पूरी तरह से शक्तिहीन

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

है या मौन में भी एक तरह की शक्ति है'?

माई के मातृत्व के माध्यम से, उपन्यास भारत में नारीत्व से जुड़ी द्विपक्षीयता की पड़ताल करता है: सर्वशक्तिमान दिव्य मातृ देवी और समान रूप से शक्तिहीन मानव माताओं का देश। हालाँकि, यह शक्तिहीन शब्द है, जिसे श्री पाठकों से माई में विचार करने का आग्रह करते हैं।

सुनैना का माई का वर्णन घर के 'अंदर' तक सीमित है, जहां परिवार के अन्य सदस्य उस पर अधिकार करते हैं। माई में मौन का 'गुण' है, केवल एक चीज जिसकी दादी उसके बारे में सराहना करती हैं। घर के अन्य सदस्यों द्वारा अवांछित चीजें, जिनमें रेफ्रिजरेटर से बासी भोजन भी शामिल है, परिवार के सदस्यों द्वारा एक गुण के रूप में देखा जाता है और वह कभी भी बाबू से उसके मामलों के बारे में सवाल नहीं करती है। इसलिए पाठकों का माई को दुख, सहनशीलता, अधीनता और दुर्बलता के अवतार के रूप में देखने का विचार अपने चरम पर पहुंच जाता है। कुमार सुझाव देते हैं :

"सुबोध और सुनैना की तरह, हमारी द्वैतवादी, तर्कवादी दुनिया की तुलना में हम मौन का अलग–अलग मूल्यांकन करना शुरू कर सकते हैं। हम एजेंसी, ताकत और कमजोरी पर फिर से सवाल उठा सकते हैं। हम इनमें से प्रत्येक चीज की बहुलता को गंभीरता से ले सकते हैं।'

उपन्यास माई को एक विनम्र पत्नी, आज्ञाकारी बहू और आत्म–बलिदान करने वाली मां की छवि के रूप में पेश करते हैं, और इन भूमिकाओं के संबंध में एक शक्तिहीन और उत्पीड़ित महिला हैं। श्री सुनैना के माध्यम से कल्पना की गई माई की छवि और मातृत्व में खो गई संभावित 'अन्य' माई की छवि पर सवाल उठाने के लिए श्री पाठक की सूक्ष्मता से जांच करते हैं।

सुनैना कहती हैं कि "माई हमेशा झुकी रहती थी। हमें पता होना चाहिए। हम उसे शुरू से देख रहे हैं। आखिर हमारी शुरुआत उसकी शुरुआत है।" यह इस विचार को दोहराता है कि माई की शुरुआत केवल बच्चों की शुरुआत है और मां बनने से पहले, माई अभी भी अस्तित्व में थी – लेकिन हमें उस व्यक्ति में कभी अंतर्दृष्टि नहीं दी गई, सिवाय इसके कि उसे शादी से पहले रज्जो कहा जाता था। इस प्रकार, कुमार माँ के विरोधाभास पर प्रकाश डालते हैं।

माई ने अपने बच्चों को एक सामाजिक व्यवस्था में नहीं खोया, जहां उसके बच्चे आत्मनिर्भर और स्वतंत्र हो जाएंगे, लेकिन घर छोड़ने के बाद भी अंतरंगता और घनिष्ठ संबंध के स्तर को बनाए रखने में सक्षम हैं। उपन्यास के अंत में, सुनैना एक चित्रकार बन जाती है और घर लौट आती है, और सुबोध विदेश चला जाता है। दोनों भाई–बहन अलग–अलग जगहों पर रहते हैं– सुनैना शादी नहीं करती और घर छोड़ देती है और सुबोध पितृसत्ता के चक्र को जारी नहीं रखता है। "भाग्य हमेशा निष्पक्ष नहीं होता"

"कमजोरी और शक्ति दोनों, मासूमियत और हेरफेर, आत्म–अस्वीकृति और स्वार्थ। यह दोनों की विरोधाभासी पारस्परिकता है, जो मास्टर–स्लेव डायलेक्टिक का एक संस्करण बनाती है, जो पर्यवेक्षकों की ओर से भ्रम पैदा करती है, और 'उत्पीड़क' और 'सुधारकों' दोनों द्वारा गलत गणना की जाती है। माई इस विरोधाभास के दिल में जाती है।

माई, अपनी मूक पीड़ा के बावजूद, अपने बच्चों पर पितृसत्तात्मक नियंत्रण को चुनौती देती है क्योंकि उनका उन पर अधिक प्रभाव है। सुनैना बताती हैं कि कैसे माई को छोड़कर परिवार के हर सदस्य ने उसे प्रतिबंधित करने और पर्दे के पीछे डालने की कोशिश की। उसने इसके लिए माई को उस पर ध्यान न देने के लिए जिम्मेदार ठहराया, लेकिन पाठक के लिए यह स्पष्ट है कि माई ने जानबूझकर ऐसा किया। माई अपने बच्चों के व्यवहार को अनुशासित और नियंत्रित करना जानती है। "कुछ लोग कोशिश करके सब कुछ पा लेते हैं, खाली हाथ आ जाते हैं और दूध से नहाना शुरू कर देते हैं"

सुनैना ने स्वीकार किया, उनकी मां के भरोसे ने उनमें गंभीरता पैदा की – दादा का पितृसत्तात्मक अधिकार, दादी की फटकार या बाबू की अथक चिंता से कुछ हासिल नहीं हुआ। माई के सूक्ष्म प्रभाव को परिवार में और कोई नहीं पहचानता, यहाँ तक कि वे बच्चे भी नहीं जिन्होंने अपनी माँ को 'बचाने' का प्रयास किया। सुनैना कहती हैं, "उनका गहरा विश्वास हममें ताकत का कुआं था", बाबू में कुछ कमी थी।यह माई का विवेकपूर्ण निर्णय था कि वह अपनी इच्छा या परिवार को अपने बच्चों पर न थोपें और उन्हें पितृसत्तात्मक पहचान में आकार दें।

यह माई का सचेत निर्णय था कि अपनी इच्छा या परिवार की इच्छा को अपने बच्चों पर न थोपें और उन्हें पितृसत्तात्मक पहचान में आकार दें। उसने अपने बच्चों को अपने दृष्टिकोण और विश्वास रखने के लिए पाला, उन्हें स्व–इच्छाधारी प्राणी बनने के लिए प्रोत्साहित किया, जो मौजूदा सम्मेलनों से प्रभावित नहीं हैं। सुनैना की आंखों के माध्यम से बताए जा रहे, आख्यान के कारण, माई का सुनैना पर सबसे गहरा प्रभाव पड़ता है, जो स्त्रीत्व की स्थापित धारणाओं से गुमराह नहीं है – मौजूदा परदे से कि उसे समाज द्वारा मजबूर किया जा रहा था, लेकिन माई ने "पर्दा धकेल दिया" इससे पहले कि इसे बढ़ाया जा सके बंद और कसकर बंद किया जा सकता है।"

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

यह पुरुष–नियंत्रित आधिपत्य प्रणाली को चुनौती देने का माई का तरीका था जिसने उसे पर्दे में रहने के लिए मजबूर किया था। माई के लिए, मातृत्व एक शक्तिशाली पहचान थी, जिसने उसे अपने बच्चों, दो व्यक्तियों को पालने के लिए सशक्त बनाया, जिन्होंने पुरुष–प्रधान समाज के सम्मेलनों पर स्पष्ट रूप से सवाल उठाया, एक तरह से जो वह नहीं कर सकती थी।

माई एक सहज पठन है, जो आपको किसी विशेष तरीके से सोचने या महसूस करने के लिए मजबूर नहीं करता है, बल्कि यह एक परिचित वास्तविकता प्रस्तुत करता है जो सूक्ष्म रूप से अपने प्रश्न प्रस्तुत करता है। आत्म–बलिदान के माध्यम से अपने बच्चों और परिवार के लिए एक माँ की अटूट प्रतिबद्धता का विषय दुनिया के साहित्य के कई हिस्सों में अक्सर होता है, हालाँकि, माई में, श्री इस बात पर सवाल उठाते हैं कि हम इसे कैसे देखते हैं।

सुनैना की कहानी के माध्यम से पाठक इस विरोधाभास को सुलझा सकते हैं। सबसे पहले पाठकों को सुनैना और सुबोध के दृष्टिकोण से माई की व्याख्या के साथ प्रस्तुत किया जाता है, जो एक महिला के रूप में आत्म–पहचान की कमी है। दूसरे, पाठकों को इस वास्तविकता के साथ भी प्रस्तुत किया जाता है कि कथा स्वयं एक संपूर्ण सत्य प्रस्तुत नहीं कर रही है। माई को शक्तिहीन बनाने में कथा उसका साथ–साथ अवमूल्यन करती है।

उपसंहार– सुनैना और सुबोध दोनो का लक्ष्य है, माई को ड्योडी की कैद से आजाद करना है, दादा–दादी की के बाद ही माई ड्योडी की सीमा से बाहर आती है, माई का ड्योडी से बाहर आना किसी के प्रयत्न से नहीं होता, बलिक व्यक्ति के न रहने से होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. माई –गीतांजलि श्री।
2. माई –नीतुकुमार।
3. वही 18.
4. वही 20.
5. वही 26.
6. वही 30.
7. वही 70.
8. https%//en-wikipedia-org/wiki/Geetanjali_Shree

*****